रविवार, दिनाँक 04-06-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सांवले चरण लगदे हिन प्यारे मैनूं, जिन्हां मोह लई सृष्टि सारी ए।

इक मोह लये प्यारे बलधारी मेरे, दूजी मोह लई सीता प्यारी ए।

नाम जप लवो उस बली दा भैणों, जिन्हां उमर चरणां विच गुज़ारी ए।

इक पासे बैठे रघुनाथ जी प्यारे, दूजे पासे लक्ष्मण ब्रह्मचारी ए।

भैणां नूं चाह है मिलने दी, हुण मिला देवो मेरे बलधारी ए।

सारी उमर कर्म करदियां बीती, हुण मैं आइयां शरण तुम्हारी ए।

भैणों नाम दा सन्दूकचा तैयार करो, महाबीर जी मिलावन धनुषधारी ए।

दासी विनती ए गुज़ारदी ए, हुण तारो सृष्टि सारी ए।

सजनों जैसा कि आप सबके पास अर्थ सहित भजनों वाली पुस्तक है। यहाँ हम आप सबसे पूछना चाहते हैं कि क्या आप उन भजनों को अर्थों सहित पढ़ते हो और उस विषय में आपस में घर-परिवार वालों के साथ चर्चा करते हो या नहीं?

''मौन''।

हमें लगता नहीं कि आप ऐसा करते होगे अन्यथा तो आप समझदार बन गये होते। अब जो सुविधा आपको आत्मज्ञान प्राप्त करने हेतु मिली हुई है व जिस द्वारा आपके परिवारजनों के मन के अन्दर आत्मज्ञान प्राप्ति का उत्साह जाग्रत हो सकता है, उस सुविधा का लाभ तो उठाना चाहिए क्योंकि इस क्रिया द्वारा न केवल आप अपने परिवार को सद्मार्ग पर लाने का कार्य सहजता से कर सकते हो अपितु इसी के साथ-साथ स्वाभाविक परिवर्तन यानि कलियुग के भाव-स्वभाव छोड़ सतयुग के भाव-स्वभाव अपनाने का कार्य भी समय अनुसार

आसानी से सिद्ध कर सकते हो। जानो सजनों इस क्रिया के प्रति लापरवाही दर्शाना जन्म-मरण के चक्रव्यूह में उलझने की और अपने पारिवारिक सजनों को भी दुर्गति की गर्त में धकेलने की बात है। अन्य शब्दों में यह निज-धर्म यानि माता-पिता के कर्त्तव्य के प्रति व अपनों के साथ सजनताई दिखाने के बिल्कुल विरुद्ध है। इस बात को ध्यान से समझ लो और याद रखो कि सत्संग में आना होता है तो बिल्कुल चैतन्य होकर बैठा करो और जो भी नीति-नियम यहाँ के बताए जाएँ उनकी पालना करते हुए स्थिरता से आगे बढ़ा करो ताकि आने वाले स्वर्णिम युग सतयुग में प्रवेश पा विश्राम को पा सको। जानो सजनों शास्त्र कह रहा है कि कलुकाल के मानवों की इतनी मदहोशी नुक्सानदायक साबित होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि ''काम'' के मद में इन्सान अन्धा हो जाता है और सत्य देख पाने में बिल्कुल असक्षम हो जाता है। ऐसे में आप ही बताओ कि ऐसा असक्षम व्यक्ति सत्यपथ पर चलते हुए अपने यथार्थ धर्म की पालना कर पाने योग्य कैसे बन सकता है? जानो यह बहुत बड़ी भूल है यानि मौका मिलने पर भी उसे व्यर्थ गँवाने की बात है। इसी कारण ऐसे व्यक्ति तो अन्त समय पछताते ही हैं, साथ ही वर्तमान में चल रहा उनका पारिवारिक जीवन भी कठिन हो जाता है।

इस समस्या से उबरने हेतु सजनों मानव-धर्म अनुसार जो भी व्यावहारिक ज्ञान आपको मिल रहा है उस धर्म को हर तरफ से अपनाकर आचार-व्यवहार में उतारना सुनिश्चित करो। इस विषय में जैसा कि आप जानते ही हो कि वर्तमान युग में तकरीबन हर मानव, मानव-धर्म की मर्यादा लाँघकर अमर्यादित जीवन जी रहा है। अगर ऐसे ही चलता रहा तो इस दुर्गति से अपने आप को व मानव जाति को ऊपर उठाने का पुरुषार्थ कैसे दिखा पाओगे? फिर तो कुपुत्र बनकर आगे अपनी सन्तानों को भी कुपुत्र ही बनाओगे। हम पूछते हैं कि यदि आप खुद ही प्रभु का कहना नहीं मानोगे तो आपकी औलाद आपका कहना क्योंकर मानेगी? अगर अभी भी हमारी बात समझ नहीं आ रही तो समझ लो कि यह आपकी अति दुर्भाग्यपूर्ण मानसिक स्थिति का द्योतक है। इस सन्दर्भ में हम तो केवल आपको सचेत ही कर सकते हैं यानि चेतावनी ही दे सकते हैं और प्रार्थना कर सकते हैं कि यह जो युग परिवर्तन की लहर चल रही है, उसको समझकर उसका लाभ उठाने के लिए तत्पर हो जाओ। हम तो कह ही सकते हैं, आगे व्यक्तिगत निर्णय तो आपके अपने हाथ में है, इसमें कोई दखल नहीं दे सकता। सजनों इन्सान को दुनियावी शोर में इतना भी बहरा नहीं हो जाना चाहिए कि वह यथार्थता की यानि आत्मिकज्ञान की बात सुन ही न पाये। यही

आपका हाल है तभी तो क्लास में बैठे तो हो, पर सुन समझ कुछ नहीं पा रहे क्योंकि आप तो अपना समय फुरनों में बैठकर व्यर्थ औरों को फुरना देने में गँवा रहे हो। यहाँ हम कह रहे हैं कि ऐसा कदापि मत करो अपितु अपना उद्धार करते हुए दूसरों के सामने एक मिसाल कायम करो ताकि आपको देखकर अन्यों के अन्दर भी स्वयं में बदलाव लाने का उत्साह जाग्रत हो। इस विषय में सजनों खुद विचार करना कि हम इसके प्रति पूरी लगन से क्रिया करना कब आरम्भ करेंगे? क्या हम यह भूल चुके हैं कि घड़ी कि टक-टक की तरह हर क्षण हमारे जीवन की घड़ियाँ समाप्ति की ओर जा रही हैं यानि हर टक के साथ हमारे जीवन की आयु भी घट रही है। यहाँ याद रखो कि यदि हम हर टक के साथ अपने ख़्याल को नीतिबद्ध आद् अक्षर के साथ अफुरता से जोड़ते हैं तो हमारा जीवन घटता नहीं अपितु स्थिर हो रहा होता है यानि अजरता की ओर बढ़ रहा होता है। इस तथ्य के दृष्टिगत हमारे लिए बनता है कि हम हर क्षण अपने ख़्याल का नाता परमात्मा के साथ सुदृढ़ता से जोड़ें। अगर यह बात समझ में आ गई हो तो ठीक है अन्यथा ना तो खुद आगे बढ़ सकोगे और न ही बच्चों को आगे बढ़ा सकोगे। अभी भी यही हो रहा है यानि न तो आप खुद आगे बढ़ रहे हो और न ही बच्चों को साथ ले रहे हो। अगर बाल अवस्था में ही उन्हें साथ ले लिया होता तो युवा अवस्था में वे आपके परिवार की व कुल समाज की ताकत बन गये होते। जानो सजनों यह ग़ुनाह है, अतः ऐसा मत करो। ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि अब परिवर्तन की लहर चल रही है। इस परिवर्तन के अनुसार स्वयं में भाव-स्वाभाविक तबदीली लाओ और ईश्वर के चरणों में समर्पित हो जाओ अन्यथा हमें कुछ सख़्त फैसला लेना पड़ेगा। अब भजन का अर्थ ध्यान से सुनोः-

भावार्थ

सांवले चरण लगदे हिन प्यारे मैंनू, इस भजन के अंतर्गत सजनों सच्चेपातशाह जी कह रहे हैं कि आद् सत्य ज्ञान के मूल स्रोत व जीवन का समुचित आचार क्रम दर्शाने वाले प्रभु के साँवले चरणों में ध्यान स्थिर बने रहना हमें बहुत ही भाता है। वह कहते हैं कि हमें ही नहीं अपितु इस मूल स्वरूप ने तो सारी सृष्टि समेत, सर्व बलवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी को व रामचन्द्र जी की भार्या सीता माता को भी लुभायमान कर अपनी ओर मोहित यानि आकर्षित कर रखा है। अतः सजनों अगर आप भी हकीकत में इन चरणों में अर्थात् प्रभु संग रहते हुए उनके दिव्य सर्गुण दर्शन का आनन्द प्राप्त करना चाहते हो तो सदा उन

चरणों में ध्यान स्थिर बने रहने वाले, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त नाम युक्ति को प्रवान कर अफुरता व समझदारी से अजपा जाप में रत हो जाओ। इस संदर्भ में सजनों के अंदर प्रभु मिलन की चाहना देखते हुए, सच्चेपातशाह जी परोपकारिता के भाव से ओत-प्रोत हो, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के आगे तहे-दिल से प्रार्थना करते हैं कि हे बलधारी आप अंतर्व्याप्त प्रभु से सबका मिलन करा दो जी।

अंत में वह सबको सद्मार्ग पर लाने हेतु निर्भयता से प्रभु के आगे अपनी गलती स्वीकारते हुए कहते हैं कि हे परमेश्वर ! सारी उम्र मैंने सकाम कर्म करने में गुजार दी पर अब मैं समर्पित भाव से आपकी चरण-शरण में आ गई हूँ और निष्काम भाव से सत्य धर्म की राह पर चलने हेतु तत्पर हूँ। इस तथ्य की स्वीकृति द्वारा वह सभी बहनों यानि जीवों को, निष्कामता से महाबीर जी की चरण शरण में आ अपने हृदय रूपी संदूकचे को नाम रूपी धन से भरपूर कर परमेश्वर का साक्षात्कार करने के लिए प्रेरित करते हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं कि हे समर्थवान ! अब तो आप सारी सृष्टि को भवसागर से पार उतार दो जी।

सजन जीः- सजन श्री शहनशाह महाबीर जी हम सजनों को भवसागर से पार उतारने के लिए तत्पर हैं। परन्तु जब तक इन्सान समर्पित नहीं हो जाता और आत्मज्ञान प्राप्त कर उसका व्यावहारिक रूप जानने के प्रति लगन से जुड़ नहीं जाता, तब तक वह अपना उद्धार नहीं कर पाता। इस तरह वह मनमत का अनुगामी अपने साथ-साथ औरों की किश्ती को भी ले डूबता है। ऐसा न हो इस हेतु ध्यान से सुनो कि युग-परिवर्तन के इस संक्रमण काल में कुदरत सभी को मौका दे रही है और कह रही है कि अपना जीवन बना लो परन्तु यदि आप ऐसा नहीं करना चाहते और मोक्ष के स्थान पर दग्ध-भस्म को पाना चाहते हो तो यह आपका अपना फैसला है। अब खुद का फैसला तो स्वीकार्य होना चाहिए अतः फिर न रोना और न ही झुखना। हम जानते हैं कि आज के युग में जीव कमज़ोर हो गया है यानि उसे जन्म का रोग लग गया है जो अपने आप में कमज़ोरी की बात है। तभी तो जीवात्मा क्या है? - यह सत्य समझते हुए भी हम इसे स्वीकारना नहीं चाहते। इस तरह जब आत्मिक बल होते हुए भी हम उससे विमुख बने रहना चाहते हैं तो कैसे अक्लमन्द नाम कहा सकते हैं? जानो जो निष्कामयुक्त होता है वही अक्लमन्द नाम कहाता है। सो हम भी यही प्रार्थना करना चाहते हैं कि सुमति में आओ, सुमति में आओ अन्यथा अन्त समय पछताना पड़ेगा। जैसा कि कहा भी गया हैः-

कलुकाल जाणां सतवस्तु आणां जीवां ने सोचदियां रह जाणां पछोताणा

अब आगे कीर्तन सुनोः-

अपना आप पछानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।

रघुवर साडे अन्दर वसदा, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

कौन है वैरी कौन है शत्रु किस नू दुश्मन जानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

कौन हंकारी, कौन अभिमानी किस ने शोर हुन पावना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

कौन कुसंगी कौन लफंगा किस नूं चोर हुण जानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

कौन है रोगी, कौन है भोगी किस नूं हुण सतावना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

कौन है ब्राह्मण, कौन है क्षत्री — वैश्य शूद्र किस नूं जानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

सजनों आज के समय अनुसार सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कितना सुन्दर सन्देश हम सबको दे रहा है जो कि अपने आप में जात-पात, अमीरी-गरीबी, तेरी-मेरी, बड़े-छोटे का सवाल

समाप्त करने की बात है। इस सवाल को समाप्त कर, जो सृष्टि का सत्य है ब्रह्म व जो सर्व-शक्तिमान, सर्व-व्यापक, सर्वज्ञ है, उसकी सर्व-व्यापकता का भान करो। इस तरह सर्व-सर्व उस परमेश्वर का आभास करते हुए, निष्काम भाव से निष्पाप जीवन जीने के योग्य बनो। यह है सजनों - सत्य को धारकर निषंग धर्म के रास्ते पर आगे बढ़ते हुए, पुनः धर्म को चार पाद पर खड़ा करना यानि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सत्य आधारित धर्म का झण्डा बुलन्द कर सम्पूर्ण मानव-जाति को एकता और शान्ति में ले आना व परस्पर एकरूपता से विचरना। ऐसा होने पर यकीन मानो कि सब रोग- सोग, वैर-विरोध, निन्दा-चुगली, लड़ाई-झगड़ा आदि सब समाप्त हो जाते हैं और केवल एक का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। यहाँ सजनों जानो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि हे मानवोः-

सजन साडे अन्दर वसदा

अब यह सजन कौन है? - जो आत्मा विच परमात्मा है। जब वही सर्व-व्यापक है तो हर जगह उसी का वास है और हमारा आत्म-स्वरूप भी उसी के प्रकाश से जगमगा रहा है। इसीलिए तो विधान है किः-

''जेहड़ा प्रकाश देखो मन-मन्दिर, ओही प्रकाश देखो जग अन्दर''

इस तरह सजनों सर्व-सर्व उसी एक को देखते हुए सजनता के प्रतीक बन जाओ। इस प्रकार जैसे ही सजन भाव मन में स्थापित हो जाएगा, वैसे ही समभाव नज़रों में हो जाएगा यानि आपकी ताकत बन जाएगा और आपकी यथार्थता का प्रतीक बन जाएगा। इस तरह सजनों जब अपनी यथार्थता जान जाओगे तो ब्रह्म की यथार्थता भी जान जाओगे और ब्रह्ममय हो जाओगे। सो सजनों समय अनुकूल, कलुकालवासियों के उद्धार के निमित्त, सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, कुल सृष्टि को प्रदान कर, कुदरत ने कितनी उच्च उपलब्धि का, प्रबन्ध किया है। लेकिन एक हम हैं जो ''काम'' के वश होकर कुदरत की इतनी मंगलकारी दात को न समझकर एकाग्र अवस्था को प्राप्त नहीं होते और दुनियाँ की तरफ से ख़्याल को हटाना अच्छा नहीं समझते। सजनों ख़्याल को बुराई या नश्वरता की तरफ जोड़ना वास्तविकता को भूलने की बात है। जब एक दफा इन्सान इस प्रकार आत्म-विस्मृत हो जाता है तो वह कलुकाल के धोखे में आ जाता है। ऐसे में वह सतयुग में कैसे प्रवेश कर सकता है? जो मानव चोला उसे आबादी हेतु मिला होता है वह उसका मोल न पाते हुए अपने लिए आप बर्बादी खरीद लेता है जो कि अपने प्रति बहुत बड़ा गुनाह होता है। सो

सजनों इस लापरवाही के प्रति खुद को कोसो और फिर खुद को सम्भालते हुए खुद को सँवारो। इस तरह अन्तर्निहित जो बिन सूरजों प्रकाश है, उस प्रकाश नाल प्रकाश होकर परिपूर्ण ज्ञानमय अवस्था में आ जाओ व निषंग जगत में विचरने के काबिल बन जाओ। इस हेतु आपके पास साधन है - सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ। इस ग्रन्थ का अध्ययन, चिंतन व मनन कर इसकी वाणी को अमल में लाओ व सबको ऐसा करने के लिए प्रेरित करो। इस तरह आप सजन बनो और सबको सजनता का पाठ पढ़ाकर एकता के प्रतीक बन एक अवस्था में आ जाओ व जन्म की बाज़ी जीत जाओ। जानो यह अत्यन्त ही सहज और सरल बात है।

इस बात को भली विध् आपके युवा बच्चों तक पहुँचाने हेतु सजनों अब दिनाँक १५ जून से १८ जून, २०२३ तक बाल युवा जीवन उत्थान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। सो आपने अपने बच्चों को इसमें भेजना है ताकि जो खुद नहीं कर पाए, वे बच्चे आत्मज्ञान यहाँ से प्राप्तकर सहजता से कर पाएँ। सजनों यदि अभी भी आपने अपने बच्चों को न भेजा तो यह कुल का वैरी होने की बात होगी। इस प्रोग्राम में युवा, प्रौढ़ व शादी-शुदा सब आ सकते हैं और समझ सकते हैं कि आज के समयकाल में प्राथमिक रूप से आत्मिकज्ञान प्राप्त करना क्योंकर आवश्यक है। सो सम्पूर्ण लाभ प्राप्ति हेतु सब समय से पहुँचना और पूरे समय के लिए यहाँ आना।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित।